

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

| | | | | | | |
|------------------|-----------|---------|-----------|-----------------------|---------|--|
| Monthly Magazine | Issue 116 | Year 24 | Volume 12 | March 2023 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150 |
|------------------|-----------|---------|-----------|-----------------------|---------|--|

हे प्रभु मेरा मन शांत रहे, स्थिर रहे, न अपेक्षायें हो, न क्रोद्ध न रोष

मन की शांति से बड़ कर कोई और चीज नहीं। करोड़ों रुपया कमा कर भी अगर आपका मन अशांत है तो उस पैसे का कोई लाभ नहीं, बहुत शोहरत और सफलता पा कर भी मन अशांत है तो उस शोहरत और सफलता का कोई फायदा नहीं, बच्चे बड़े बड़े ओहदों पर हैं, जायदाद है, सुख के सब साधन है पर मन शांत नहीं तो इनका कोई फायदा नहीं। यदि धन दौलत और शौहरत में ही शांति होती तो आत्महत्या करने वालों में बड़ी बड़ी हस्तियां या उनके बच्चे न होते।



जपू में राम राम प्रभु राम, ध्याऊँ मैं राम राम हरे राम।
शिमले में राम राम प्रभु राम, गाऊँ मैं राम राम श्री राम।

ईश्वर को पाने की कोशिश करते हैं पर मन अशांत रहता है। सच्चाई तो यह है कि ईश्वर से भी मेल तभी सम्भव है

Contact:

BHARTENDU SOOD

Editor, Publisher & Printer

231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जब मन शांत है। जो अशांत होकर ईश्वर की खोज में ईधर उधर भटकते हैं। उन्हें ईश्वर नहीं मिलता। यह है शांत मन का महत्व। शांत मन का पता व्यक्ति को देख कर ही मालूम हो जाता है। उसका सब से बड़ा सूचक है कि उस व्यक्ति को मिलने के बाद आपको भी शांति मिलती है, चाहे थोड़े समय के लिये ही हो। उसें मिलने को फिर से मन करता है। मन में पाप की वृत्ति कुछ समय के लिये छूट जाती है। यही महात्मा और देवता की निशानी है। यही नहीं, मन शांत है तो शरीर भी स्वस्थ रहेगा। शरीर की ब्याधी कम हो जायेगी। हम ने पढ़ा है कि स्वामी दयानंद को जब उनके शत्रुओं ने जहर दे दिया था तो वह दो महीने तक जहर के प्रभाव से बहुत पीड़ा में रहे पर उनका चेहरे पर पीड़ा का कोई असर नहीं था। यह है शांत मन का प्रभाव।

अगला प्रश्न आता है कि मन हमारा शांत कब होगा ? ईश्वर पर अटूट विश्वास इसके लिये पहला साधन है। ईश्वर पर अटूट विश्वास का अर्थ है दिल में यह विश्वास होना कि मेरे प्रयत्नों के बाद जो भी परिणाम आया उसी में मेरी भलाई है। ईश्वर ने मेरे लिये इस से भी बेहतर कुछ रखा है जो कि समय आने पर मेरे सामने आ जायेगा। —“मिले भरोसा आपका हे मेरे जगदीश “ इसी भावना को बता रहा है। हम ईश्वर की भक्ति करते हैं पर यदि ईश्वर पर विश्वास नहीं करते ऐसी भक्ति किसी काम की नहीं। महाभारत का एक सुन्दर संस्मरण है—जैसा कि बहुत लोगों को विदित है, श्री कृष्ण और पांच पाण्डवों की पत्नि द्रोपदी आपस में रिश्तेदार थे। द्रोपदी और भगवान कृष्ण बैठे हुये वार्तालाप कर रहे थे तभी द्रोपदी ताहना देते हुये श्री कृष्ण से बोली—प्रभु, आप सभी की सहायता के लिये तुरन्त आ जाते हो परन्तु जब कौरवों के दरवार में मेरा चीर हरण हो रहा था तो आप आये तो सही पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। दुर्योधन और दुशासन तब तक मुझे सारी सभा में अपमानित कर चुके थे। कृष्ण ने जब इस बात को सुना तो कुछ मुसकराये और बोले—द्रोपदी, तुम ने मुझे याद ही तब किया, जब कि तुम्हारे बाकी सभी उपाय बिफल हो गये और तुम असहाय हो गई। पहले तुमने धृतराष्ट्र को पुकारा, फिर द्रोणाचार्य को और फिर भीष्मपितामह को। जब उन में कोई नहीं आया तो तुमने मुझे पुकारा और मैं आ गया। वास्तविक जीवन में देखें तो यही हाल हम सब का है। जब हर जगह से निराश हो जाते हैं, कुछ भी नहीं सूझता तो ईश्वर को याद करते हैं। परन्तु जिस का ईश्वर में विश्वास होता है वह ऐसे मान कर चलता है कि मैं ईश्वर की गोदी में बैठा हूँ। वह ईश्वर के लिये सब कुछ भुला देता है। इस लिये मन की शान्ति के लिये ईश्वर पर विश्वास होना बहुत आवश्यक है। ईश्वर पर विश्वास क्या है और स्थिर मन क्या होता है, यह महात्मा आनन्द स्वामी के जीवन की इस घटना से जाहिर होता है। उनके बेटे रणवीर को अंग्रजों ने देशद्रोह के अभियोग में फांसी के दण्ड की सजा सुना दी गई थी। लोग सहानुभूति के साथ महात्मा आनन्द स्वामी के पास आ रहे थे। कुछ उदास थे तो कुछ की आंखों में आंसू। पर महात्मा आनन्द स्वामी के चेहरे पर सदा की भान्ति मुस्कराहट थी। एक व्यक्ति उन्हें हंसते हुये देखकर आश्चर्य से बोला, “तेरी छाती में हृदय है या पत्थर? तेरे पुत्र को फांसी की आज्ञा हो गई, और तू अब भी मुस्करा रहा है?” तब महात्मा आनन्द स्वामी गंभीरता से बोले—“मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है। यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा रणवीर मेरे पास ही रहे तो संसार की कोई शक्ति उसे मार नहीं सकती और यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि वह मेरे पास न रहे और कोई दूसरा रूप धारण करे तो फिर संसार की कोई शक्ति उसे बचा नहीं सकती। तब मैं रोउं किसलिए?” तुम्हारी चाही में ही प्रभो, मेरा कल्याण है। **शेष पृष्ठ 4 पर**

पुस्तक

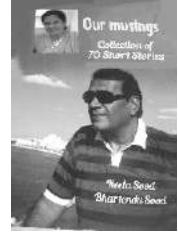
(English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम **Our Musings** है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही है जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईंगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है



नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मान्य है।

शिमला का **SHARDA**

कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

Marketing Off. H. No. 231 Sector 45-A, Chandigarh-160047

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप बैंक या कौश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीऑर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का बैंक भेज दे।
या **Google Pay No. 9465680686** या **Paytm No. 9465680686**

मन की शांति का दूसरा साधन उपनिषद के इस संदेश में है

**ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥**

जो कुछ भी इस जगत में दिखाई दे रहा है उस सब में ईश समाया हुआ है । अर्थात् हर वस्तु इश्वर की है जो कि उसने हमें प्रयोग के लिये दी है ।, यदि हम त्याग भाव इन सब वस्तुओं का प्रयोग करते हुये जीवन जीयेंगे अर्थात् इनके मोह से दूर रहेंगे तो मन शांत रहेगा । लोभ पाप का मूल है और पापी मन कभी शांत नहीं रह सकता ।

इस बात को इन पक्तियों में बहुत सुन्दर ब्यान किया है ।

**जो कुछ दिख रहा जगत में, सब में ईश समाया है,
त्याग भाव से जीवन जीना, यह ढ़लती फिरती छाया है,
मोह माया के वशीभूत, क्यों करता मेरा मेरा है,
भूल गया यह जगत बावटे, चिड़िया रैन बसेरा है,
अति लोभ में कभी न फंसना, ऋषियों ने फरमाया है,
किसके साथ गई बोलो, नश्वर माया और काया है।**

सिक्ख धर्म के छठे गुरु हरगोबिन्द जी के जीवन की इस घटना इस बात को बता रही है । गुरु हरगोबिन्द जी के पास शहर का सब से अमीर व्यक्ति आया और लगभग एक घंटे तक अपनी अमीरी की शाने मारता रहा कि मेरे पास इतनी हवेलियां, इतनी जमीन, इतना सोना— चांदी आदि आदि है । गुरु जी सुनते रहे । एक घंटे के बाद जब उसने बोलना बंद किया तो गुरु जी अन्दर से कपड़ा सिलने वाली एक सूई ले कर आये और उस उस अमीर साहूकार से बोले—मैं तुम्हें यह सूई दे रहा हूं अगले जन्म में जब मिलोगे तो मुझे बापिस कर देना । साहूकार ने हाथ जोड़कर हां कह दी, और बापिस घर आ कर सारी घटना अपनी पत्नि को सुना डाली । पत्नि बुद्धिमान थी, वह गुरु हरगोबिन्द जी की बात को समझ गई और बोली—इस सूई को मरने पर अपने साथ कैसे ले कर जाओगे? दूसरा तुम्हें क्या पता है कि तुम अगले जनम में क्या बनोगे । तुमने कैसे सोच लिया कि तुम अगले जन्म में गुरु जी से मिलोगे ही । साहूकार अब समझ गया था कि कुछ भी साथ नहीं जाना और जब साथ नहीं जाना तो व्यर्थ में अभिमान किस बात का । वह अगले दिन गया और गुरु जी ने चरणों में गिर गया । ऐसे होते हैं अध्यात्मिक या ईश्वर तक पहुंचे व्यक्ति ।

त्याग भाव से इस संसार की हर चीज को देखना ही अध्यात्मबाद की पहली सीढ़ी है।

जब व्यक्ति इन भौतिक वस्तुओं को आवश्यकता से अधिक महत्व देता है तो इन को प्राप्त करने के लिये वह पाप करने से भी नहीं हिचकचाहता और इस तरह वह मन की शांति को बंच देता है । ऐसा सब करने के बाद आप चाहे साधु बन जायें या तीर्थ स्थानों पर घूमे मन अशांत ही रहेगा । महात्मा

अगर हम अपना मन शांत रखना चाहते हैं तो कम से कम एक बात का ध्यान रखें कि हम अपने कार्य द्वारा किसी का हक तो नहीं छीन रहे। अगर कार्य करते हुये यह सोचा आ जाती है और आप अपनी आत्मा की आवाज को सुन कर उस कार्य को त्यागने का साहस रखते हैं तो एक बात पक्की है कि आपका मन अशांत नहीं होगा।

शांत मन के लिये एक और बात जिसको जीवन में अपनाने की बहुत आवश्यकता है वह है ईश्वर की व्यवस्था में पूर्ण विश्वास, जिसमें कर्मफल भी आ जाता है,। पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम कर्म न करें। आवश्यकता इस बात की है कि जब कर्म करते हुये भी सफलता न मिले तो इश्वर की ईच्छा का सम्मान करें और उस की व्यवस्था का सम्मान करें। उदाहरण के लिये, अगर आप अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ायेंगे तो आप को ऐसा लगेगा कि बहुत सारे ऐसे व्यक्ति हैं जो पद, धन, शौहरत मे आप से कहीं आगे है पर जहां तक योग्यता का प्रश्न है आपके सामने कुछ भी नहीं। परन्तु यदि अपने से नीचे भी दृष्टि दौड़ायेंगे तो लगेगा कि बहुत से व्यक्ति ऐसे भी हैं जो आप से अधिक योग्य होने के बावजूद भी वहां नहीं पहुंच पाये जहां आप हैं या फिर वह सब कुछ हासिल नहीं कर पाये जो ईश्वर ने आप को दिया हुआ है। यही है ईश्वर की व्यवस्था जो कि हमारे इस जन्म या फिर पिछले जन्म के कर्मों पर निर्भर करती है।

शांत मन के लिये हम यह मानकर चलें कि इस जगत की सब कुछ मेरे लिये नहीं पर सब के लिये है। अगर हम सब कुछ पाना चाहेंगे, जिसकि हमें आवश्यकता भी नहीं, तो मन की शांति का प्रश्न ही नहीं उठता। रहने के लिये एक मकान की ईच्छा करना जायज है पर उस को प्राप्त करने के बाद और मकान प्राप्त करने के लिये लगे रहना मन को अशांति की तरफ ही ले जायेगा। इसी लिये कहा गया है त्याग भाव से जीयें। अगर हमारे पास कोई चीज जरूरत से अधिक है तो कोशिश यह हो कि वह जिन के पास नहीं है उनके काम आ सके।

अगली बात जो कही गई है वह है न अपेक्षायें हो न क्रोध हो न रोश। वैसे देखा जाये जो क्रोध और रोश दोनो ही अपेक्षाओं के न पूरा होने से पैदा होते हैं। उदाहरण के लिये हम किसी मित्र की कठिन समय में सहायता करते हैं और वह मित्र कुछ समय बाद उस बात को भुला देता है। उसका यह अपेक्षा का भाव हमें पहले दुखी करता है, फिर क्रोद्धित और फिर हमारे दिल में रोश घर कर जाता है और यही हमारे मन की अशांति का कारण बन जाता है। इस लिये अगर आप मन कि शांति चाहते हैं तो किसी से भी चाहे आप के अपने बच्चे हैं, अपेक्षा न रखें। यह सोच लें कि वह भी तो जी रहे हैं जिन के बच्चे नहीं है। आज हमारे समाज में अधिकतर बृद्ध व्यक्ति सब प्रकार के सुख, धनश साधन होने के बावजूद भी अपेक्षाओं के कारण दुखी है। इसका सब से सुन्दर उपाय है ——निस्वार्थ सेवा को अपना धर्म बनायें। जितनी मन की शांति उस में मिलती है उतनी किसी और चीज में नहीं।

अतिषय लोभ ही है हानि और दुख का कारण

सीताराम गुप्ता

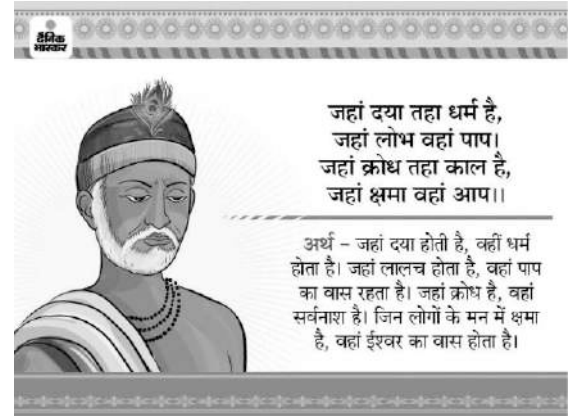


बहेलिया जाल बिछाता है और पंछी उसमें फँस जाते हैं। यह उनकी नियति है। लेकिन जब मनुश्य ही मनुश्य के लिए जाल बिछाए और मनुश्य मनुश्य द्वारा बिछाए अथवा फैलाए गए जाल में फँस जाए तो इसे क्या कहेंगे? एक-आध बार ग़लती होना स्वाभाविक है लेकिन यदि मनुश्य किसी के बिछाए जाल में बार-बार फँस जाता है तो ये उसकी समझ और विवेक पर बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न अवश्य है। मनुश्य का विवेक बार-बार क्यों उसे धोखा दे जाता है? क्या बार-बार धोखा खाना उसकी भी नियति है? वास्तव में बार-बार धोखा खाना मनुश्य की नियति नहीं हो सकती लेकिन जब वो सहज बुद्धि का प्रयोग करने के बजाय किसी लोभ अथवा लालच के वशीभूत होकर कोई कदम उठाता है तो छल-कपट का षिकार बनता है। इसके लिए मनुश्य स्वयं दोशी है इसमें संदेह नहीं।

पिछले दिनों एक निवेश कंपनी लोगों के तीन सौ करोड़ रुपये लेकर चंपत हो गई। कंपनी ने अपने निवेशकों को विष्वास दिलाया कि वे डेढ़ साल में उनकी रकम सत्ताइस से सौ गुना तक बढ़ा कर देंगे। कंपनी के निर्देशकों के सबज़बाग़ में आकर अनेक लोगों ने उनके पास अपना पैसा जमा करवा दिया। उन्होंने कुछ दिनों तक लोगों को अच्छा पैसा दिया भी लेकिन तीन सौ करोड़ रुपए एकत्र करके वे एक दिन रातोंरात ग़ायब हो गए। कभी कोई एक महीने में रकम दोगुनी करने का वादा करता है तो कोई बाजार भाव से आधे पैसों में सामान देने का विष्वास दिलाता है। लेकिन क्या ये संभव

है? हर्गिज नहीं। इस खुली प्रतियोगिता के जमाने में कोई कंपनी इतना लाभ कैसे कमा सकती है कि वो अपने निवेशकों के धन को हर महीने दोगुना कर दे? बिलकुल नहीं।

फिर भी लोग इन घटनाओं से सबक क्यों नहीं लेते? क्यों बार-बार अपनी खून-पसीने की गाढ़ी कमाई इस प्रकार के लुटेरों के हाथों में सौंप देने को विवष हो जाते हैं? इसका प्रमुख कारण है हमारी अतिशय



लोभवृत्ति जिसके कारण हम न तो कॉमन सेंस का इस्तेमाल करते हैं और न पुरानी घटनाओं से सीख ही लेते हैं। एक पुरानी घटना याद आ रही है। हर साल की तरह उस साल भी गाँव में ठठेरे आए और गलियों में घूम-घूम कर आवाजें लगाने लगे कि टूटे-फूटे बर्तन सँवरवा लो, बर्तनों पर कलई करा लो। घरों से टूटे-फूटे बर्तन बाहर निकलने लगे और होने लगा मोल-भाव। जो काम पहले दस रुपये में होता था उस काम के लिए ये नए ठठेरे सिर्फ पाँच रुपये माँग रहे थे। ये जानकर लोग खुश थे लेकिन फिर भी मोल-भाव हो रहा था।

ठठेरे जो जितना कहता मान लेते और भाग-भाग

कर बर्तन जमा करने लगे। देखते-देखते बर्तनों का अंबार लग गया। धीरे-धीरे साँझ घिर आई। ठठेरे अपना खाना बनाने का जुगाड़ करने में लग गए और लोगों से कहा कि कल सुबह भट्टी चालू करके बर्तनों की मरम्मत का काम शुरू करेंगे। लोग बर्तन देकर अपने-अपने कामों में लग गए। जो लोग उस समय घरों में नहीं थे घर आने पर उन्होंने जब ये सुना कि इतने सस्ते में बर्तन मरम्मत हो रहे हैं तो वे भी अपने-अपने बर्तन लेकर ठठेरों के रुकने के स्थान पर पहुँचे। वहाँ जाकर देखा तो पाया कि न तो ठठेरे ही वहाँ मौजूद थे और न बर्तन ही रखे थे। अब लोगों की समझ में आया कि वे इतने कम दामों में बर्तनों की मरम्मत करने के लिए क्यों तैयार हो गए थे। लेकिन अब क्या हो सकता था? अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत?

जब भी हम लोभ या मुफ्त-लाभवृत्ति के वशीभूत हो जाते हैं तो ऐसा ही होता है। लेकिन सोचिए कि कोई किसी को मुफ्त में या बहुत कम कीमत में कोई चीज़ या सेवा कैसे उपलब्ध करा सकता है? क्या आप सामान्य अवस्था में ऐसा कर सकते हैं? नहीं न? तो कोई भी कैसे ऐसा कर सकता है और यदि कोई ऐसा करने का दिखावा करता है तो वह बहुत महँगा पड़ने वाला है। अतः हानि और दुख से बचने के लिए लोभ का त्याग करना ही श्रेयस्कर है। लालच बुरी बला है लेकिन हम लालच के वशीभूत होकर एक असंभव बात को भी नकार नहीं पाते। लोभ हमारी आँखों पर मोटा परदा डाल देता है। मोटे ब्याज के लालच में मूलधन से भी हाथ धो बैठते हैं। लालचवश पहले तो ग़लत या अस्वाभाविक बात का विरोध नहीं कर पाते और जब भारी नुकसान हो जाता है तो विरोध करना संभव नहीं होता क्योंकि इससे हम स्वयं उपहास के पात्र बन जाते हैं।

अखबार इस प्रकार के नटवर लालों के कारनामों से भरे रहते हैं लेकिन हम नहीं चेतते। हमारी लोभवृत्ति

के कारण ही रोज़ कोई न कोई नया अषोक जडेजा या सुभाश अग्रवाल पैदा हो जाता है। कभी हम पैसा दुगना-तिगुना कराने के फेर में तो कभी ज़ेवर बढ़वाने के चक्कर में लुट-पिटकर बैठ जाते हैं। कभी चिटफंड कंपनियाँ घोटाले करती हैं तो कभी प्लांटेशन कंपनियाँ। पिछले दशकों में प्लांटेशन कंपनियों ने भी निवेशकों को कम चूना नहीं लगाया। उनकी इन योजनाओं को बेचने वाले भी कम दोशी नहीं होते। मैंने एक प्लांटेशन कंपनी के एजेंट से एक बार पूछा था कि क्या सचमुच इतनी रिटर्न मिल सकती है तो उसने कहा कि बिलकुल नहीं। फिर क्यों लोगों को ये स्कीमें बेचते हो? उसने कहा कि मोटा कमीशन मिलता है। क्या कमीशन के लिए हम कुछ भी करने लग जाएँ? न तो हमें कमीशन के लिए ग़लत काम करना चाहिए और न ही अधिक लाभ के चक्कर में बेवकूफ बनना चाहिए।

वैसे निवेशक ही नहीं ठगने वाले भी कम घाटे में नहीं रहते। आज तक कोई नटवर लाल कानून के षिकंजे से बचा भी नहीं है फिर भी नए लोगों के इस धंधे में आ जाने का कारण उनकी भी अतिषय लोभवृत्ति ही है। हम लोभ के दुष्क्र में फँसकर डूब न जाएँ इसके लिए ज़रूरी है कि हम सामान्य बुद्धि का प्रयोग करते हुए ग़लत चीज़ का शुरु से ही विरोध करें और उससे दूर रहें। यदि हम छोटे-मोटे लालच में नहीं पड़ेंगे तो सदा के लिए बड़े धोखों और नुकसान से बचे रहेंगे। लोभवृत्ति ही नहीं अपितु मुफ्त-लाभवृत्ति, आत्मप्रशंसा तथा खुशामद करवाने की आदत, अहंकार, प्रकृति के नियमों के विरुद्ध जाना ऐसी आदतें हैं जो एक दिन हमारे पतन का कारण बनती हैं। अतिशय लोभ की प्रवृत्ति से बचकर ही हम इन दुर्गुणों से बचे रहकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - 110034 मोबा0 नं

Hyper-nationalism takes its toll

Bhartendu Sood

Nationalism is a man made concept. Nationalism doesn't find a place in Vedas which are believed to be divine creation for entire Universe and humanity. Nation is something similar to other similiar man made concepts like family. The definition of family what we had in India about 70 years back is not relevant anymore. Therefore it is not wrong to say all such concepts are man made and their definition keeps on changing.

Only forty years back USSR was a big nation but today it is divided into many nations like Russia, Ukraine etc and they are involved in fierce fighting with each other. People are the same but geographical boundaries have changed and the fight is for saving their newly created geographical boundaries and humans are not the concern. They have forgotten that they were sons of the same soil until a few years back. Therefore, it will not be wrong to say that a nation derives its identity from geographical boundaries. They say Bharat was a big nation which had its boundaries up to Kandhar in the East and Burma in West. But today the same Bharat has many nations that includes Pakistan, Myanmar, Afghanistan and india. The number of nations under UNO is constantly on increase. One can't say as to how many more nations will be there by the end of this millennium.

What is nationalism? According to me, since nation is mainly based on the geographical boundaries, nationalism should be to do everything to protect the boundaries of your nation and do everything to bring glory to it. Its interpretation can be narrow as well as liberal depending upon the leader and the party in rule. For example the definition of Nationalism in today's India is different from what it was in the Nehru era.

Next comes the hyper-nationalism which according to me is to be madly possessed with your country to the extent that one becomes bereft of the quality to admire the better qualities of the other nations. Somehow, nationalism has acquired a similar definition in India and Pakistan both. Things have come to a pass when a few words of praise for the people or even artists and celebrities of Pakistan can land one in trouble in India and he can be dubbed as a traitor. Only the other day while praising Chinese values Infosys ex founder Narayana Murthy

expressed his fears that his outspoken views may lead many to form wrong opinion about him and he may be called a traitor..

Is nationalism really good and worth inculcating in your children ? My answer is ---excess of everything is bad and harmful. Purified butter is good but its excess can make you sick. Without two thoughts, it is threat to humanity and its biggest example is the present state of affairs in the Pakistan.

Not many may believe that at one time Pakistan was much more prosperous than India. Its Rupee commanded higher value than of the Indian rupee in the international market. Even on Human development index it was above India with regard to many critical parameters. But today the same



Pakistan is in shambles. There is shortage of everything right from food to medicines. If one asks me the reason. I will hold hypernationalism as the culprit.

Pakistan, ever since its creation in 1947, braced a highly flawed definition of nationalism which is called hypernationalism. There were two main reasons. First it's formation was after the blood shed, acrimony and hatred on both the sides. Second, while in India democracy survived but in Pakistan it failed. Army got the hold and for its own benefit army never allowed the wounds of partition to heal and found the best nutrition in inculcating hypernationalism and hate for cross-border people, in its citizens. This hypernationalism meant not only to defend its own boundaries but to create disturbance in the neighbouring country in order to see that the neighbouring country does not has lasting peace. But it was all for a heavy price. It is not there that India is free from this vice. One particular leader used hyper-nationalism extensively to remain in power.

Population wise Pakistan is roughly one sixth of India and area wise one fourth. The size of its economy is USD 350 billion which is roughly one tenth of India. But when it comes to defence budget it spends 3.83% of its GDP against 2.66% of its GDP by India. Decreasing GDP in proportion to ever increasing defence budget has resulted in excessive inflation and resultant deprivation. This was somehow manageable till USA and World Bank was liberal in their funding and financial assistance but today when they have withdrawn, Pakistan is finding itself in deep trouble and in state of deprivation.

Lesson for India-----As Pakistan can't compete with India, similarly India can't compete with China. Not only the size of Chinese economy is almost six times at 19 trillion but technology wise it is far ahead. We made all efforts to stop imports from China but

the last year figures show it had increased by whopping 12%, in the last one year. It happened because they are far ahead in technological advancement. Willy nilly all nations depend upon China and we can't be an exception. Their biggest asset is their work culture which is embedded in certain values like character, discipline, commitment and ability to put work hard which we badly lack. A wise person realises his limitations and gracefully accepts strong man's superiority though silently he may continue to work to overtake him. If we can accept the superiority of US then what stops us from accepting the superiority of China and have friendly ties with them.

What I have written is enough to antagonise hyper-nationalist in India but then the truth must prevail.



Monkey face of Sage Narada.

Bhartendu Sood

Most of us while offering our prayer, invariably ask God to grant our wishes. Every one has his own wish depending upon his need, age, mental and physical state. Even when a family visits some holy shrine all the members have different wishes before the deity. For example a girl deep in love with a boy asks God for the culmination of their relationship in to a marriage. A man having materialistic pursuits asks for the fast growth of his wealth. A student prays for a good rank which may help him to pursue good career. A person suffering from an ailment asks for fast recovery and good health. A person with spiritual lineage wants to be one with Him and if he has become enlightened and contented he doesn't ask for anything for himself and instead prays for the Universal peace and asks God to bestow his grace and peace on every human being.

But even when we have unwavering devotion to god, all our wishes are not granted by Him. Why is God selective then? There is a small story- Once Rishi Narad got enamored and infatuated by the beauty of goddess Kamini and wanted to possess her. Being conscious of his not so striking looks, he prayed to God to grant him his own looks. But God had some

thing else for his devotee and answered Narada's prayers by giving him the face of a monkey, with the result his desire and efforts to win over Kamini fell flat. Distraught, Sage Narada felt let down. Veiled by illusion of Maya, his mind was filled with bizarre thoughts and at one point he started cursing God. When another sage saw him in this condition, he asked Narada the reason of his unusual and bizarre behaviour. When told, that sage using his knowledge and wisdom told Narada "With your devotion you seem to have become very dear to God. He never wanted that his devotee treads a wrong path and He saved you by making your face like this" Like wise, many a times when our wishes are not granted we become angry with God. We forget that he has something better for us in store. He saves us as a doctor saves his patient by administering a medicine which for a while tastes bitter."

Those, who have their absolute faith in God; come to believe that whatever God does is for their good. Such noble souls become free from desires and develop in them the unusual quality of equanimity and it is the first step to much cherished salvation.

बच्चों को सुविधाएं दें, पर संस्कारों के साथ

पिंकी सिंघल

बच्चे देश के भविष्य के निर्माता कहलाते हैं। जिस देश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग युवा वर्ग होता है उस देश की प्रगति दर उन देशों की अपेक्षा तीव्र होती है जिनकी जनसंख्या में किशोर एवं वरिष्ठ लोग अधिक शामिल होते हैं। हमें अपने देश को तरक्की की राह पर ले जाने के लिए देश की जनसंख्या को सशक्त एवं चरित्रवान बनाना चाहिए क्योंकि देश का विकास उसके नागरिकों पर निर्भर करता है। यह सच है कि किसी भी देश की प्रगति में बड़ा हाथ देश के युवा वर्ग का होता है, किंतु, यदि बाल्यावस्था से ही बच्चों में अच्छे संस्कार डाले जाएं तो युवावस्था तक पहुंचते-पहुंचते वे संस्कारी एवं चरित्रवान नागरिक बनते हैं और अपने देश की संस्कृति को आगे ले जाने में सहायक सिद्ध होते हैं।



इस लेख का उद्देश्य यह है कि हमें अपने बच्चों को हर संभव सुख सुविधाएं देने का प्रयास करना चाहिए, ताकि बच्चों में आत्मविश्वास की वृद्धि हो और वे पूरे जोश और विश्वास के साथ जिंदगी में चुनौतियों का सामना कर पाएं और आगे ही आगे बढ़ सकें। प्रत्येक माता-पिता और अभिभावक की यही कोशिश होती है कि वह अपने बच्चों को दुनिया की तमाम सुख सुविधाएं उपलब्ध कराएं और जिन चीजों से वे स्वयं कभी वंचित रहे, उन चीजों का अभाव उनके बच्चों को न देखना पड़े। इसलिए वे अपने बच्चों को दुनिया की हर खुशी देना चाहते हैं।

हमारी हमेशा यही कोशिश होनी चाहिए कि हम बच्चों के लालन-पालन में कोई कमी न रखें। उनके प्रति यह हमारा कर्तव्य भी है और बच्चों का अधिकार भी। दुनिया के प्रत्येक बच्चे को हंसी खुशी सुख सुविधाओं के साथ जीने का अधिकार है जिससे उन्हें वंचित नहीं रखा जाना चाहिए। परंतु, इन सभी बातों के साथ-साथ यह बात भी नितांत सत्य है कि बच्चों को सुख सुविधाएं उपलब्ध कराएं किंतु ये सुख सुविधाएं ही उनकी प्रगति और तरक्की के मार्ग में बाधक न बननी शुरू हो जाएं, इस बात का भी हमें विशेष रूप से ध्यान रखना होगा।

प्रायः होता यह है कि बच्चे भौतिक सुविधाओं के नाम पर गलत आदतों का शिकार हो जाते हैं। वे अवांछित मांगें रखने लग जाते हैं और जब उनकी ये इच्छाएं और मांगें पूरी नहीं की जातीं, तो वे उग्र हो जाते हैं और अंततः समाज और देश के लिए घातक सिद्ध होते हैं क्योंकि उनका इस प्रकार का गैर जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार भविष्य में गैरकानूनी गतिविधियों में बदल जाता है। प्रायः लोगों को यह कहते सुना जाता है कि आज की पीढ़ी के बच्चों में सहनशक्ति की कमी है इसलिए वे तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं। किंतु, मेरा मानना यह है कि हमारे बच्चे किस प्रकार का व्यवहार करते हैं वह काफी हद तक हम बड़ों अर्थात् अभिभावकों पर निर्भर करता है। हम अपने बच्चों के समक्ष जिस प्रकार का व्यवहार करते हैं, वह उनके लिए उदाहरण बन जाता है और वे हमारा अनुकरण करना आरंभ कर देते हैं।

इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे देश के जिम्मेदार नागरिक बनें, संस्कारी, सुशील, सभ्य बनें, तो हमें सर्वप्रथम अपने व्यवहार को सभ्य एवं संतुलित बनाना होगा। कहा भी तो गया है न कि चैरिटी बिगिंस फ्रॉम होम। उपरोक्त स्थितियां उत्पन्न न होने पाएं, इसका पूरा दायित्व हम अभिभावकों और माता-पिता का ही है। हमें अपने बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार देने होंगे, बड़ों का सम्मान करना करना सिखाना होगा, मजबूर और मजलूम लोगों की मदद करने की आदत को विकसित करना होगा, छोट्टों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार भी उन्हें हम ही सिखा सकते हैं। इस बात का हमें ही विशेष ध्यान रखना होगा कि उनको दी गयी सुविधाओं का किसी भी सूरत में दुरुपयोग न हो और वे समाज के प्रति अपने दायित्वों को समझें और उन्हें पूरी ईमानदारी के साथ निभाएं।

Swami Shradhdhanand Jyanti. Feb-22nd 1856 to Dec.23rd 1926.

Kewal Ahluwalia

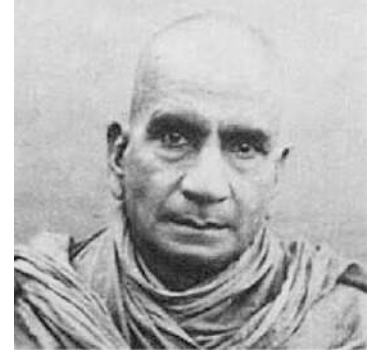
When the word 'Mahatma' is used the name that comes to mind instantly, by Indians and foreigners alike, is that of Mohandas Karamchand Gandhi. However there is another person rarely referred to in India's history books, who is hailed with the title Mahatma. The man is Mahatma Munshi Ram, a freedom fighter, educationalist, follower of the Arya Samaj and a committed sanyasi. In 1917 Munshiram became a Sanyasi, came to be known as Swami Shradhdhanand.

There had been many shining stars who worked for the propagation of the philosophy and principles of Arya Samaj that was founded by the great visionary Maharishi Dayanand Saraswati in 1875 and Swami Shradhdhanand was one of them. It is hoped that the lives of these extraordinary great men who are the outstanding leaders of the ARYASAMAJ will inspire our present generation to make some useful contribution to mankind.

His achievements in the realm of spiritualism, social service, Vedic education, national cohesion, Shuddhi movement, to attain Swaraj and carrying the wisdom of Vedas far and wide and above all in keeping the flag of OM flying was his mission and for that he attained martyrdom. His towering image, both moral and physical, moved the masses. The masses comprised all classes and votaries of all castes and creeds, regions and religions

He was rather reluctantly to join any political party because he thought that it might interfere in his Spiritual and Educational work and yet he was in the forefront leading a crowd of protesters in Delhi against the British government. But after the Massacre of Jalianwala Bagh no one in the congress committee was ready to take the responsibility of managing the Session. Swamiji voluntarily offered his services as president of reception committee and successfully managed the

session. It was also a turning point in the religious and political history of India which was struggling for freedom from the British Empire.



When British officer of an armed detachment under his command wanted to disperse the freedom fighters by using force of bayonets, it was he Shradhdhanand Sanyasi who bared his chest and asked the soldiers to fire at him first before opening fire on the protesters. Wisdom dawned on the British officers and ordered soldiers to fall back and an ugly situation was averted. The protesting masses comprising Hindus and Muslims applauded the Arya Sanyasi.

On 4th April 1919 a large crowd of Muslims assembled in the Jama Masjid, Delhi to mourn the dead freedom fighters in police firing elsewhere in Delhi. The prominent leaders came to Swami Shradhdhanand to invite him to address the mourners in the mosque. The Arya Sanyasi began his address with a Ved mantra from Rigved mantra.

**AUM tvam hi nah pita vaso tvam mata
shatkrato babhuvith. Aghate sumnimahe.**

On December 23, 1926, Arya Samaj missionary Swami Shradhdhanand was assassinated by a man called Abdul Rashid whom Gandhi called brother Rashid. About Shradhdhanand's assassination, Jawaharlal Nehru has written in his autobiography, "The end of that year 1926 was darkened by a great tragedy, which sent a thrill of horror all over India. What a death for a man who had bared his chest to the bayonets and marched to meet their fire!"

जीवन जीने की कला

प्रत्येक मनुष्य की अन्तिम अभिलाषा सुख एवं आनन्द की प्राप्ति है और व सुख तथा आनन्द भी क्षणिक नहीं होना चाहिये बल्कि स्थिर, स्थायी एवं शाशवत होना चाहिये अर्थात् आज है परन्तु कल नहीं है ऐसा सुख मनुष्य को नहीं चाहिये। इस अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए ही मनुष्य पदार्थों का संग्रह करता है, संग्रह में वह अपना और अपने परिवार की सुरक्षा देखता है। यह सत्य है कि सुरक्षा और सुख प्रायवाची है। जहां व्यक्ति सुरक्षित नहीं, वहां सुख का आभास नहीं। वह सदैव उन्हीं कार्यों को करता है जिससे उसे अधिक से अधिक धन एवं वस्तुयें प्राप्त हो जायें। यह सत्य है कि मनुष्य का जीवन धन के बिना चलना कठिन है। संग्रह के लिये शास्त्रों में इनकार नहीं किया गया परन्तु वह सम्पूर्ण संग्रह न तो जीते-जी उसके लिये है और न ही मरने कि पश्चात् उसके लिये है। भगवन् कृष्ण ने गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुये कहा है कि-



‘लोकसंग्रमेवाऽपि सम्पश्यन् कर्तुमर्हसि।’

तुम्हें लोक कल्याण के लिये संग्रह करना चाहिये, तुम यदि पूर्णकाम हो गये हो तो भी तुम्हें निष्काम भाव से कर्म करना चाहिये अर्थात् तुम्हारा संग्रह लोक कल्याण के हेतु होना चाहिये। यदि तुम्हारे कर्म इस दिशा में हैं तो कर्म तुम्हारे लिये बन्धन का कारण नहीं बन सकते। ऋषियों के जीवन जीने की यही कला थी। वेद का ऋषि कहता है कि -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य सिवद् धनम्॥

इस विश्व में जो कुछ भी जड़-चेतन, चराचर है व ईश्वर से प्र्याप्त है। अर्थात् ईश्वर का ही मान कर चलें, जो कि ईश्वर ने मानव को त्यागपूर्ण ढंग से भोगने को दिया है। ऐसी भावना रखते हुये यदि तुम आसक्ति का त्याग करके उस परमात्मा से सतत युक्त होते हुये धर्मपूर्वक, गिद्ध दृष्टि का त्याग कर विषयों का उपभोग करते हो तो कार्य और कार्य करते हुये कमाया हुआ धन कभी भी तुम्हारे लिये दुःख में हेतु नहीं होंगे। भगवान् का यह सनातन सन्देश ऋषियों के जीवन में साक्षात् चरिताश्रु हुआ।

परन्तु मनुष्य जब स्वयं को अपने मूल परमात्मा से अलग मान लेता है तो वह धन-सम्पत्ति होतु हुये भी सदैव अभावग्रस्त रहता है और सुख और आनन्द को खो देता है। उसे यह बोध नहीं होता कि जड़ पदार्थों में सुख-शान्ति नहीं। इसीलिये भगवान् ने कहा कि जब तक तुम अपने मूल कारण को नहीं जान लेते जो शाशवत आनन्द स्वरूप है तब तक तुम भटकते रहोगे। इसीलिये पहले अपने जीवन की संचालिका बुद्धि को ही समझाना पड़ेगा। बुद्धि को समझाने को अर्थ है बुद्धि को शुद्ध करना। बुद्धि तब शुद्ध होगी तब वह सांसारिक पदार्थों का चिन्तन छोड़कर अपनी आत्मा से युक्त होकर परमात्मा दर्शन के लिये भक्ति में लग जायेगी। इसलिये गीता का उपदेश है कि अपनी बुद्धि को युक्त कर लो अर्थात् परमात्मा से जोड़ लो क्योंकि बिना युक्त हुये न शान्ति मिलेगी न सुख।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।

न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्॥

जो युक्त नहीं उसके पास शुद्ध बुद्धि नहीं हो सकती, जिसके पास शुद्ध अर्थात् सात्त्विक बुद्धि नहीं उसके पास अच्छी भावना नहीं हो सकती इसलिये ईश्वर भक्ति द्वारा, ईश्वरिय गुणों को धारण कर पहले युक्त बनें।, आगे श्रीकृष्ण कहते हैं-

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।

जो परमात्मा से युक्त नहीं वह कामनाओं से प्रेरित होने के कारण उनके फल में आसक्त हो जाता है और सदैव फलप्राप्ति का ही चिन्तन करते हुये स्वयं उसमें बंध जाता है। क्योंकि यह केवल अपने लिये ही सोचना है, इसलिये योग, ज्ञान अथवा भक्ति के द्वारा अपनी बुद्धि को परमात्मा से जोड़ दें फिर शान्ति, सुख और आनन्द प्राप्त हो सकता है जो मनुष्य की सहज अभिलाषा है।

सत्य धर्म का सत्तमभ है और ईश्वरिय गुण हैं विद्वान सन्य के मार्ग पर चलते हुये ईश्वर को प्राप्त का लेते हैं।

जो परमात्मा के अस्तित्व को नहीं मानता, जो अपने मूल परमात्मा को नहीं मानता उसे शान्ति कहाँ से मिल सकती है?

जिसे शान्ति नहीं उसे सुख भी नहीं मिल सकता, जिसे सुख नहीं वा आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकता



चर्म रोग से बचने का सरल उपाय

शरीर में फोड़े-फुंसी, खुजली, दाद-खाज आदि सभी प्रकार के चर्म रोग प्रायः तब होते हैं, जब हमारी त्वचा पसीने के रूप में विकारों को निकालने में असमर्थ हो जाती है। नहाने में साबुन का अधिक प्रयोग और व्यायाम की कमी इसका प्रमुख कारण होते हैं।

साबुन तरह-तरह के केमिकलों से बने होते हैं, जो बाहर से त्वचा को भले ही साफ कर देते हों, लेकिन रोम-छिद्रों में घुसकर उनका मार्ग बन्द कर देते हैं और पसीने का निकलना रोक देते हैं। रोम- छिद्रों से हमारा शरीर साँस भी लेता है। रोम-छिद्र बन्द हो जाने से न केवल उसे साँस लेने में रुकावट आती है, बल्कि जो विकार पसीने के साथ निकलना चाहिए वह भी रुक जाता है और त्वचा में ही एकत्र होने लगता है। इसके अलावा केमिकल खून में भीमिल जाते हैं, जिससे खून खराब होता है और अनेक प्रकार के चर्म रोगों की भूमिका बन जाती है।

कोई भी चर्म रोग हो जाने पर सबसे पहला उपाय है सभी प्रकार के नहाने के साबुनों, बाहरीतेलों, क्रीम, पाउडर आदि का प्रयोग बन्द कर देना। इसके स्थान पर स्नान करते समय रूमाल या उसी आकार के तौलिये को पानी में तर करके उससे शरीर को रगड़ना चाहिए। इससे न केवल रोम- छिद्र खुल जाते हैं, बल्कि शरीर का भी मालिश के रूप में अच्छा व्यायाम हो जाता है। वैसे तो गीले तौलिये से रगड़ने से ही त्वचा की बाहरी सफाई अच्छी तरह हो जाती है, फिर भी यदि कभी ऐसा लगता हो कि त्वचा अच्छी तरह साफ नहीं हुई है या बाहरी गन्दगी लग गयी हो, तो सप्ताह में केवल एक बार नहाने के साबुन का उपयोग किया जा सकता है। यह साबुन भी पतंजलि का अथवा गाँधी आश्रम के खादी भंडारों में मिलने वाला नीम साबुन या चन्दन साबुन होना चाहिए। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बने हुए साबुन बहुत हानिकारक होते हैं, क्योंकि उनमें केमिकलों की भरमार होती है।

केवल इतना करने से ही अधिकांश त्वचा रोग समाप्त हो जाते हैं, क्योंकि विकारों को निकलने का मार्ग मिल जाता है। यदि रोग अधिक पुराना हो, तो जल्दी ठीक करने के लिए उस स्थान पर गीली मिट्टी का लेप करना चाहिए। ऐसी मिट्टी भूमि के नीचे की पूरी तरह साफ की हुई होनी चाहिए और उसमें किसी भी प्रकार की गन्दगी, कूड़ा-करकट या कंकड़ नहीं होने चाहिए। इस मामले में चिकनी मिट्टी और पीली मिट्टी सबसे अच्छी होती है। सड़कों और गड्ढों की खुदाई के समय निकलने वाली मिट्टी को साफ करके उसका प्रयोग इस कार्य के लिए बेखटके किया जा सकता है। वह भी न मिलने पर बाजार में सर्वत्र उपलब्ध मुल्तानी मिट्टी का प्रयोग किया जा सकता है

Mind and Mindset

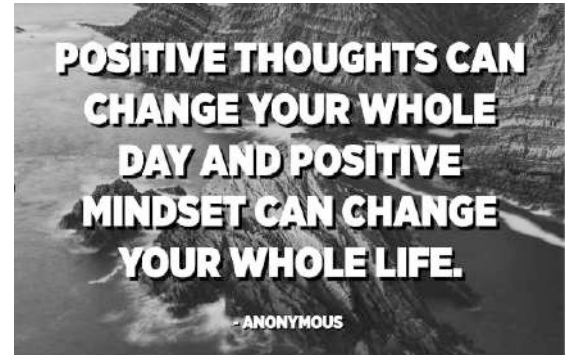
Bhartendu Sood

According to Mr N.R. Narayana Murthy , who is widely considered as the father of Indian I T Industry “Progress is often equal to the difference between mind and mindset”. Nothing illustrates it better than my experience of travel in Europe, sometimes back.

Accompanied by my wife, I was travelling from Cesky Krumlov to Prague in CZEH republic, by Flix Bus. The bus had no conductor but driver only. First, he checked the tickets of the passengers who had booked online, then issued the tickets to those who had no booking but could be given seats. Thereafter, he got the luggage placed in the luggage chamber on one side of the bus. It is he who would open the luggage chamber, set right the luggage and then shut it. On its way, bus had five halts and every time he got down to handle the luggage of passengers who got down or boarded the bus. When the bus halted at a road side hotel for dinner, he took his food with other passengers, no separate cabin for him as we have in India, and paid the bill. At no point I could see frowns on his face or rudeness in his behavior. Having lived in India, both of us were full of admiration for his attitude.

In the hotels we stayed, invariably there would be only one person at reception who would handle everything. They do not have peons, assistants whom they can give orders. If photocopy has to be taken he would move himself. Cleaning his place of work is entirely his responsibility. After a week or so I was convinced that the secret of their physical fitness is their habit of doing all manual work themselves. No need to go to Jim. Most of the ailments take root when sitting on our chair we expect others to do things for us.

After landing back in Delhi, we took CTU's AC bus from ISBT Kashmiri Gate. Even this bus had side compartment for keeping the luggage. But, as the passengers proceeded to keep their luggage, conductor made an announcement in his shrill voice, “ Only those passengers should



keep luggage in the side compartment whose destination is Sector-17 Bus Stand. I will not open it on the way. (meto ni bar bar udhiya janda) Those who have to get down at any other station on the way, should adjust the luggage under their seat” There was a separate man to issue the tickets at Delhi counter of CITU and it left when it was full with passengers. The only job that the conductor did during the five hours journey was to take sumptuous lunch in a Deluxe Dhaba for which he had not to pay. I was just wondering whether such deluxe or AC buses really required a conductor who gets a salary of Rs 50000 PM which we tax payers bear.

As most of us must have read, we, a Nation of 1400 million population, same as that of China has a GDP of 3 trillion against China's \$18 trillion, nearly six times that of India. This difference is mainly due to difference in Work attitude of the respective citizens.

Nothing tells better of our attitude to work than the fact that Chandigarh MC is has provided GPS based human tracking system to keep a close watch on its employees. I am of the opinion that rather than making ourselves to be regulated by such GPS based human tracking system, will it not be better for us to change our work attitude. It will make us healthier, in mind as well as physique, and the country will also be more prosperous. There is no other way to match China, the passion our PM very rightly nurtures. It is rightly said that no one can destroy iron but its own rust can, likewise none can destroy a man but his negative mindset can.

कभी निरुपल नहीं जाता हमारा दूसरों को प्यार, सम्मान व महत्त्व देना

सीताराम गुप्ता



कुछ समय पहले की बात है कि एक हिंदी फिल्म देख रहा था। फिल्म और मुख्य पात्र का नाम है मिली। मिली एक मॉल के फूड जंक्शन में काम करती है। एक दिन गलती से मिली रेस्टोरेंट के फ्रीजर रूम में बंद हो जाती है। फ्रीजर रूम की सरदी के कारण उसकी हालत बहुत खराब हो जाती है लेकिन वो उस भयंकर जमा देने वाली सरदी में भी बचने के प्रयासों में कोई कसर नहीं रख छोड़ती। वह कई घंटों तक असहनीय कष्ट सहती है लेकिन अंततः उसे बचा लिया जाता है। इस फिल्म की कहानी में एक किरदार है मॉल का सिक्युरिटी गार्ड। फिल्म में सिक्युरिटी गार्ड के प्रति मिली का आत्मीय व्यवहार और उसके फ्रीजर रूम में बंद होने की घटना को देखकर मुझे बहुत पहले पढ़ी हुई एक कहानी याद आ गई। एक व्यक्ति एक फ्रीजर प्लांट में इंजीनियर था। वह वहाँ कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों से हमेशा अत्यंत विनम्रता से पेश आता था और आते-जाते समय सबका अभिवादन करता था।

इंजीनियर के आत्मीय व्यवहार के कारण सभी लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। एक दिन छुट्टी के समय जब सब कर्मचारी जाने की तैयारी कर रहे थे तो अचानक प्लांट में कोई तकनीकी खराबी आ गई। इंजीनियर महोदय प्लांट में आई खराबी को सुधारने में लग गए। जब तक उनका कार्य पूरा हुआ काफी देर हो चुकी थी। वो प्लांट के एक ऐसे कोने में कार्य कर रहे थे जहाँ किसी का भी ध्यान उनकी तरफ नहीं गया। छुट्टी के समय सभी कर्मचारी प्लांट के दरवाजे बंद करके अपने-अपने घर चले गए। इंजीनियर महोदय ने काफी जोर-जोर से आवाज़ें लगाईं पर अंदर की आवाज़ें बाहर तक नहीं जा रही थीं।

ठंड बढ़ती ही जा रही थी। बचने का कोई उपाय नहीं दिखलाई पड़ रहा था। इंजीनियर महोदय ठंड के मारे अपनी चेतना खोते जा रहे थे। फ्रीजर प्लांट उनकी कब्रगाह बनता दिखलाई पड़ रहा था। तभी एक चमत्कार घटित हुआ। वास्तव में जो चमत्कार घटित होते हैं उनकी भूमिका हम स्वयं लिखते हैं।

अचानक फ्रीजर प्लांट का दरवाजा खुला और एक सिक्युरिटी गार्ड अंदर आया। उसने सारी लाइटें जला दीं और इंजीनियर महोदय को पुकारने लगा। सिक्युरिटी गार्ड



उन्हें खोजकर बाहर निकल लाया। इंजीनियर महोदय ने उनकी जान बचाने के लिए सिक्युरिटी गार्ड के प्रति आभार व्यक्त किया और उससे पूछा, “आपको कैसे पता चला कि मैं अंदर रह गया हूँ?” सिक्युरिटी गार्ड ने जवाब दिया, “सर इस प्लांट में कई दर्जन लोग काम करते हैं लेकिन आप अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो हर रोज आते हुए मेरा हालचाल पूछते हैं और जाते हुए बाय कह कर जाते हैं। मुझे याद आया कि आपने सुबह तो मेरा हालचाल पूछा था लेकिन शाम को आपसे मुलाकात ही नहीं हुई। मुझे कुछ अनहोनी की आषंका हुई और मैं आपको ढूँढ़ता हुआ अंदर चला आया।”

फिल्म मिली के अंत में इस कहानी को भी डाला गया है। हमारी अच्छी आदतें विशेष रूप से हमारा किसी को प्यार व सम्मान अथवा महत्त्व देना विश्व परिस्थितियों में

हमारे जीवन तक को बचा सकता है इसमें संदेह नहीं। ये सब बातें नई नहीं हैं। हम सब इन बातों को जानते हैं लेकिन अहंकारवश अथवा अन्य कारणों से उन्हें अपने व्यवहार में नहीं लाते। कई बार जब अन्य लोग सबके साथ इस प्रकार का व्यवहार करते हैं तो हम उसे नाटक समझने की गलती कर बैठते हैं। यहाँ भी हम बहुत बड़ी भूल करते हैं। यदि अच्छी बातों को नाटक के रूप में किया जाता है तो वही अच्छी बातें एक दिन हमारे आचरण में सम्मिलित हो जाती हैं। इसलिए हमें स्वयं भी ऐसा नाटक करने से परहेज़ नहीं करना चाहिए। वैसे भी किसी को नमस्कार करने, किसी की कुशलता के विशय में पूछने अथवा मुस्कराकर बात करने में किसी का कुछ नुकसान नहीं होता लेकिन आंतरिक प्रसन्नता अवश्य मिलती है।

दूसरे हम जिन्हें कमतर अथवा बहुत सामान्य समझने की भूल करते हैं वे किसी भी तरह कम महत्त्वपूर्ण नहीं होते। जब हमारी गाड़ी रुककर खड़ी हो जाती है और उसे धक्का देने की ज़रूरत होती है तब ये सामान्य व्यक्ति ही हमारी गाड़ी को धक्का देकर उसे दोबारा चालू करने अथवा आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। हमें चाहिए कि हम कभी किसी की उपेक्षा न करें अपितु रोज़ मिलने-जुलने वालों से बातचीत करें। अपने आसपास के ऐसे व्यक्तियों से न केवल आत्मीयतापूर्वक पेश आएँ अपितु उनको यथेष्ट सम्मान व महत्त्व भी दें। उनके कार्य की प्रशंसा करें। उम्र में बड़े लोगों को विशेष रूप से सम्मान दें। जब कोई हमारे साथ अच्छी तरह से पेश आता है, हमें मान देता है तो हम उसके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहते हैं। जब हम किसी के साथ अच्छी तरह से पेश आएँगे, किसी को महत्त्व देंगे तो वो भी हमारी उपेक्षा नहीं करेगा।

हमारे पास धन-दौलत अथवा अन्य किसी भी प्रकार की समृद्धि आती है तो हम उसे सहेज कर रख लेते हैं। धन की प्रायः तीन गतियाँ कही गई हैं – सदुपयोग, दुरुपयोग अथवा विनाश। यदि हम अर्जित धन-दौलत अथवा समृद्धि

का सदुपयोग नहीं करेंगे तो उसका दुरुपयोग अथवा विनाश अवश्यभावी है। समझदार व्यक्ति अपने धन-दौलत का न केवल सदुपयोग करते हैं अपितु अतिरिक्त धन-दौलत को किसी उपयोगी व्यवसाय में लगा देते हैं अथवा बैंक में डाल देते हैं। पैसा भी सुरक्षित हो जाता है और अतिरिक्त आय भी नियमित रूप से होती रहती है। अच्छी आदतों अथवा सद्गुणों के संबंध में भी यही बात कही जा सकती है। सद्गुणों का उपयोग नहीं करेंगे तो उनका भी विनाश हो जाएगा और उनसे होने वाले लाभों से हम वंचित रह जाएँगे। ये एक ऐसा निवेश है जिसे हर व्यक्ति न केवल सुगमतापूर्वक कर सकता है अपितु जितनी अधिक मात्रा में चाहे कर सकता है।

हमारी अच्छी आदतों, सद्गुणों व हमारे आत्मीय व्यवहार के कारण ही लोग हमारा ध्यान रखने को विवश हो जाते हैं। जैसा कि ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कई बार तो कुछ अच्छी आदतें हमें मृत्यु के मुख तक में से खींच लाती हैं। लेकिन ये तभी संभव है जब हमारी बातों व व्यवहार में सचमुच आत्मीयता हो। कई व्यक्ति किसी से मिलने पर घंटों बातें करते रहेंगे लेकिन एक भी बात ऐसी नहीं करेंगे जिसमें सामने वाले की रुचि हो अथवा जिससे उसे अपनापन लगे। हम सब अपने मिलने-जुलने वाले लोगों से आत्मीयता, प्यार व सम्मान ही तो चाहते हैं और जो ऐसा करता है हम उसके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहते हैं। हमें भी अपनी बातचीत में न केवल दूसरों की रुचि का ध्यान रखना चाहिए अपितु हमारी बातचीत व व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिससे दूसरे व्यक्ति स्वयं को महत्त्वपूर्ण व सम्मानित अनुभव करें। लोगों के प्रति हमारा आत्मीय व्यवहार कभी निश्फल नहीं जा सकता।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली – 110034
मोबा0 नं0 9555622323

वर्तमान में मनुवाद का नकारात्मक अर्थ

प्रियंका सौरभ

वर्तमान में मनुवाद शब्द को नकारात्मक अर्थ में लिया जा रहा है। इसके पर्याय के रूप में भीब्राह्मणवाद का प्रयोग किया जाता है। परन्तु मनुवाद के खिलाफ बोलने वालों को मनु या मनुस्मृति के बारे में पता ही नहीं है। वे अपने निहित स्वार्थों के लिए मनुवाद का नारा लगाते हैं। वस्तुतः जिस जाति व्यवस्था के लिए मनुस्मृति और महर्षि मनु को दोषी ठहराया गया है, उसमें जाति शब्द का उल्लेख तक नहीं है।

जब हम मनुवाद शब्द को सुनते हैं तो हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि मनुवाद क्या है? महर्षि मनु मानव संविधान के प्रथम प्रवक्ता और आदि शासक माने जाते हैं। मनु की संतान होनेके कारण ही हमें मानव या मनुष्य कहा जाता है। सृष्टि के सभी प्राणियों में एकमात्र मनुष्य ही है जिसे विचारशक्ति प्राप्त है। मनु ने मनुस्मृति में समाज संचालन के लिए जो व्यवस्थाएं दी हैं, उसे हीसकारात्मक अर्थों में मनुवाद कहा जा सकता है।

मनु कहते हैं कि कर्म के अनुसार ब्राह्मण शूद्रता को प्राप्त हो जाता है और शूद्र ब्राह्मणत्व को। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य से उत्पन्न संतान भी अन्य वर्णों को प्राप्त हो सकती हैं। विद्या और योग्यता के अनुसार सभी वर्णों की संतानें अन्य वर्ण में जा सकती हैं— 'जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विज उच्यते।' अर्थात् जन्म से सभी शूद्र होते हैं और कर्म से ही वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनते हैं। मनुस्मृति की मूल भावना पवित्र है, जो योग्य से योग्य का प्रतिपादन करती है।

वेदों की विधि व्यवस्था को कर्तव्य व्यवस्था भी कहा गया है। उसी के आधार पर मनु ने सरल भाषा में मनुस्मृति की रचना की। धर्मशास्त्र वैदिक दर्शन में संविधान या कानून का नाम है। मनुस्मृति न तोदलितविरोधी है और न ही ब्राह्मणवाद को बढ़ावा देती है, बल्कि यह केवल मानवता और मानवीयकर्तव्यों की बात करती है। मनु किसी को दलित नहीं मानते। दलितसंबंधी व्यवस्थाएं अंग्रेजों और वामपंथियों की देन हैं। प्राचीन साहित्य में दलित शब्द नहीं है। मनुष्यों की चार जातियां नहीं, बल्कि चार श्रेणियां हैं, जो पूरी तरह से उनकी योग्यता पर आधारित हैं। पहला ब्राह्मण, दूसरा क्षत्रिय, तीसरा वैश्य और चौथा शूद्र।

समाज के संचालन के लिए जो व्यवस्थाएं दी हैं, उन सबका संग्रह मनुस्मृति में है, अर्थात् मनुस्मृतिमानव समाज का प्रथम संविधान है, न्याय व्यवस्था का शास्त्र है। यह वेदों के अनुकूल है। वेद कीकानून व्यवस्था अथवा न्याय व्यवस्था को कर्तव्य व्यवस्था भी कहा गया है। वैदिक दर्शन में संविधान या कानून का नाम ही धर्मशास्त्र है। महर्षि मनु कहते हैं— धर्मो रक्षति रक्षितः। अर्थात् जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। वर्तमान संदर्भ में जो कानून की रक्षा करता है कानून उसकी रक्षाकरता है। कानून सबके लिए समान होता है।

जिन्हें हम वर्तमान समय में धर्म कहते हैं वास्तव में वे संप्रदाय हैं। धर्म का अर्थ है जिसकोधारण किया जाता है और मनुष्य का धारक तत्व है मनुष्यता, मानवता। मानवता ही मनुष्य का एकमात्र धर्म है। हिन्दू मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, सिख आदि धर्म नहीं मत हैं, संप्रदाय हैं। संस्कृत के धर्म शब्द का पर्यायवाची संसार की अन्य किसी भाषा में नहीं है। भ्रांतिवश अंग्रेजी के 'रिलीजन' शब्द को ही धर्म मान लिया गया है, जो कि नितांत गलत है। इसका सही अर्थ संप्रदाय है। धर्म के निकट यदि अंग्रेजी का कोई शब्द लिया जाए तो वह 'ड्यूटी' हो सकता है।

कानून ड्यूटी यानी कर्तव्य की बात करता है। मनु ने भी कर्तव्य पालन पर सर्वाधिक बलदिया है। उसी कर्तव्यशास्त्र का नाम मानव धर्मशास्त्र या मनुस्मृति है। आजकल अधिकारों की बात ज्यादा की जाती है, कर्तव्यों की बात कोई नहीं करता। इसीलिए समाज में विसंगतियां देखने को मिलती हैं। मनुस्मृति के आधार पर ही आगे चलकर महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी

धर्मशास्त्र का निर्माण किया जिसे याज्ञवल्क्य स्मृति कहा जाता है।

अंग्रेजी काल में भी भारत की कानून व्यवस्था का मूल आधार मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति रहा है। कानून के विद्यार्थी इसे भली-भाँति जानते हैं। राजस्थान हाईकोर्ट में मनु की प्रतिमा भी स्थापित है। वर्तमान सन्दर्भ में भी यदि हम शासन व्यवस्था को देखें तो प्रशासन चलाने के लिए लोगों को चार

श्रेणियों— प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ में विभाजित किया गया है। महर्षि मनु की व्यवस्था के अनुसार हम प्रथम वर्ण को ब्राह्मण, दूसरे को क्षत्रिय, तीसरे को वैश्य और चौथे को शूद्र रख सकते हैं।

मनुस्मृति 10/65 में महर्षि मनु कहते हैं कि— एक ब्राह्मण अपने गुणों, कार्यों और क्षमताओं के आधार पर शूद्र बनता है और इसके विपरीत। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य के बीच भी ऐसा आदान-प्रदान होता है। मनु के विधान के अनुसार यदि ब्राह्मण की संतान अयोग्य है तो वह अपनी योग्यता के अनुसार वर्ग चार या शूद्र बनता है। इसी प्रकार चतुर्थ श्रेणी के बच्चे या जन्म से शूद्र अपनी योग्यता के आधार पर प्रथम श्रेणी या ब्राह्मण बन सकते हैं। हमारे प्राचीन समाज में ऐसे कई उदाहरण हैं जब कोई व्यक्ति शूद्र से ब्राह्मण बना।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के गुरु वशिष्ठ महाशूद्र चांडाल की संतान थे, लेकिन अपनी योग्यता के बल पर वे ऋषि बने। विश्वामित्र अपनी योग्यता से क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि बने। भारतीय इतिहास में ऐसे और भी कई उदाहरण मिलते हैं, जो स्वतः ही मनु के दलित विरोधी होने के आरोपों का खंडन करते हैं। मनुस्मृति न तो दलित विरोधी है और न ही ब्राह्मणवाद को बढ़ावा देती है। यह सिर्फ मानवता की बात करती है और मानवीय कर्तव्यों की बात करती है।

मनुस्मृति एक ही मनुष्य जाति को मानती है। उस मनुष्य जाति के दो भेद हैं। वे हैं पुरुष और स्त्री। ब्राह्मणवाद मनु की देन नहीं है। इसके लिए कुछ निहित स्वार्थी तत्व ही जिम्मेदार हैं। प्राचीन काल में भी ऐसे लोग रहे होंगे जिन्होंने अपनी अयोग्य संतानों को अपने जैसा बनाए रखने अथवा उन्हें आगे बढ़ाने के लिए अपने अधिकारों का गलत उपयोग किया होगा। हमारे संविधान में कहीं नहीं लिखा कि भ्रष्ट तरीके अपनाकर अपनी अयोग्य संतानों को आगे बढ़ाएं। इसके लिए समाज या फिर व्यक्ति ही दोषी हैं। उदाहरण के लिए संविधान— निर्माता बाबा साहेब अंबेडकर ने संविधान में आरक्षण की व्यवस्था 10 साल के लिए की थी, लेकिन बाद में राजनीतिक स्वार्थों के चलते इसे आगे बढ़ाया जाता रहा। ऐसे में बाबा साहेब का क्या दोष? मनु सबके लिए शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य करते हैं। बिना पढ़े लिखे को विवाह का अधिकार भी नहीं देते, जबकि वर्तमान में आजादी के 70 साल बाद भी देश का एक वर्ग आज भी अनपढ़ है। मनुस्मृति को नहीं समझ पाने का सबसे बड़ा कारण यह है कि अंग्रेजों ने उसके शब्दशः भाष्य किए, जिससे अर्थ का अनर्थ हुआ। पाश्चात्य लोगों और वामपंथियों ने धर्मग्रंथों को लेकर लोगों में भ्रांतियां भी फैलाईं। इसीलिए मनुवाद या ब्राह्मणवाद का हल्ला ज्यादा मचा। मनुस्मृति को मौलिक रूप में और उसके सही भाव को समझकर पढ़ना चाहिए। विद्वानों को भी सही और मौलिक बातों को सामने लाना चाहिए। तभी लोगों की धारणा बदलेगी।

दाराशिकोह उपनिषद पढ़कर भारतीय धर्मग्रंथों का भक्त बन गया था। इतिहास में उसका नाम उदार शहजादे के नाम से दर्ज है। फ्रेंच विद्वान जैकालियट ने अपनी पुस्तक 'बाइबिल इन इंडिया' में भारतीय ज्ञान विज्ञान की खुलकर प्रशंसा की है। पंडित और पुजारी तो ब्राह्मण ही बनेगा, लेकिन उसका जन्मगत ब्राह्मण होना जरूरी नहीं है। यहां ब्राह्मण से मतलब श्रेष्ठ व्यक्ति से न कि जन्म से।

आज भी सेना में धर्मगुरु पद के लिए जन्म से ब्राह्मण होना जरूरी नहीं है, बल्कि योग्य होना आवश्यक है। ऋषि दयानंद के आर्यसमाज में हजारों विद्वान हैं, जो जन्म से ब्राह्मण नहीं हैं। इनमें सैकड़ों पूरोहित जन्म से तथाकथित दलित वर्ग से आते हैं।

Can Hindenburg Adani issue dent the confidence of ever burgeoning Indian investors in the Indian stock market ?

Bhartendu Sood

A few developments can't be ignored while commenting on this subject. First covid has proved to be a boon for Indian stock market. With all time in the world, Indian middle class found it a happy and most productive time pass. Second, the things so developed that anybody who entered the market in April 2020 and in the three months period after that, not only made money but it was manna from heaven. From 24000 sensex rose to 62000 in a matter of 16 months, many stocks multiplied even four times in a year. Though factually, it is 43000 a figure in Feb,2020 to 62000 in October,2021 but then capitalizing the opportunity is the success mantra, in the stock market Third, Indian markets supported by ever increasing small investors, successfully insulated itself from the International markets and developments. It is no more influenced by the statement of US Finance Secretary as it happened in 2014. This all is the manifestation of the confidence of Indian investors in the Indian stock market.

But three developments can take away a few of the the investors from bourses and they may prefer keeping money in Banks or in gold. First, there has been negative return in the last 15 months. Index is 5% lower than ithe peak it attained in October 2021. Fifteen months is indeed a long period. In banks money would have appreciated by 10%, and in gold it would have appreciated by more than 15% even. Therefore, when juxtaposed with sensex, net negative return is 15% when compared with bank Fixed deposits and 20% when compared with investment in gold, in a matter of last 15 months, is enough to shake the confidence of investors in the share market. Not to forget that while Fixed deposits and investment in gold is hasslefree, the investment in share market takes away lot of valuable time apart from other hassles.

Second, which is more worrisky and discouraging is Hindenburg-Adani issue. It has cemented the belief that that we always have one or other scamster for whom banks, institutions and regulators shut the eyes and he is accorded a preferial treatment whether it was Manmohan Singh government or Modi government. Millions of investors who had purchased shares of Adani



group companies for appreciation have lost 50% of the capital and if its impact continues for a year, the average return on equity even for those who had entered in April 2020 may be not around 10% in 4 years period if the sensex settles at 60000 level by may 2024, which can't be ruled out.

Third is the failure of important narrative-Corporate Governance. For example the price earings of Adani enterprises have shot up 25 times in a matter of two years. Why did it not raise the eye brows of plethora of Regulators we have in our country? Why Adani only, look at the IPOs of Paytm, Zotom and Nazara Technology, prices have tumbled down to one third. Free pricing is good but then we do not have all entrepreneurs in the legue of rahul Bazaj and narayan Murthy. Most are highly ambitious smitten by avarice. Hence free pricing in the matter of IPOs needs review.

It is also true that dabbling in Share market is an addiction. To start is to continue. Investors in the market rarely learn from various scams. Even if they learn, impact is for a short time. But, then this Hindenburg-adani issue has once again reinforced the truism that bourses are not meant for everybody. Five percent make profit at the expense of 95% though these 95% never realize this truism and even if they realize the addiction makes them to ignore it and it is the reason that stock market is continuously growing. One can't have sympathy with the investors in the stock market as t is their surplus money which they enjoy investing in the stocks knowing well the risks involved. Afterall gambling has its own charm which could not dissuade a learned like Yudhishtira even.

बुढ़ापा

डा महेश विद्यालकांर



बुढ़ापे को अमृत अवस्था भी कहा गया है। बुढ़ापे का अपना ही सौन्दर्य होता है। बृधावस्था अनुभवों का भण्डार होती है। इसी कारण जब बृध घर में होते हैं तो जवान युवक युवतियां अक्सर गलत निर्णय लेने से वच जातें हैं। बुजुर्गों से घर के वातावरण में मर्यादा,पालीनता बनी रहती है। और एक बड़ा लाभ यह होता है कि घर में रह रहे बच्चों को जीवन की शिक्षा मिलती रहती है। बुढ़ापा परिवार में प्रेमपूर्वक व्यतीत हो, इसी में बृध का और परिवार का दोनो का सुख है, और इसे प्राप्त करने के लिये दोनो के ही कुछ कर्तव्य है। घर में बुजुर्ग ऐसे खूटा होते हैं, जिनसे पूरा परिवार बंधा रहता है। वे परिवार का आधार और घर की षोभा होते हैं उनके पास जीवन का अनुभव और ज्ञान होता है।

बुढ़ापा एक अटल हकीकत है। बृधावस्था पके फल की तरह मिठास, सुगन्ध और सुख देने वाली होनी चाहिये। जहां बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि बुजुर्गों को बुढ़ापे में घर से अलग न करें, क्योंकि उनके दर्द, पीढायें और आहें, घर की सुख-षांति और प्रसन्नता छीन लेती है। इसी तरह बुजुर्गों का भी यह कर्तव्य बन जाता है कि वह अपने रोग और दुख से परिवार के बाकी सदस्यों को हर समय दुखी न बनायें प्रनयुत उत्तम विचारों, सवभाव, सोच तथा व्यवहार से खुद भी आन्नदपूर्वक रहें ओर दूसरों की खुषी को भी महत्व दें। बिमारी और षरीर की निर्वलता तो बुढ़ापे में स्वभाविक है इस लिये इस को ले कर चलने में ओर सहन करने में ही बुद्धिमता है। बच्चों से बहुत अधिक अपेक्षाओं के साथ भी बृधा अवस्था दुखदायक हो जाती है। अगर आप चण्डीगढ़ रहते हैं और बेटा या बेटा बंगलूर में काम करते हैं तो यह सम्भव नहीं कि वे आप के पास चण्डीगढ़ आ जायें। आप को ही उनके पास जाकर बंगलूर में रहना होगा और उस वातावरण के अनुसार ढालना होगा। बात सिर्फ सोच बदलने की है। जहां ऐक सोच जीवन को दुखी बनाती है वहीं उसी हालात में दूसरी सोच जीवन को सुखी बनाने की क्षमता रखती है। अक्सर बुढ़ापे की अवस्था पहुंचन तक मनुश्य की परिवारिक जिम्मेदारियां खतम हो चुकी होती हैं बर्षर्तिया वह परिवार में इस कदर न डूबा हो कि अपने बच्चों की जिम्मेदारियों को भी अपने आप ही ढो रहा हो। अगर आप ऐसा कर रहें है तो षायद आप बुढ़ापे का आनंद न ले पाये और जिम्मेदारियों के बोझ से ही दबा रहे। जो बच्चों के कर्तव्य है वे उन्ही को निभाने दें बूढ़े व्यक्ति को परिवार में रहते हुये बच्चों के साथ के तालमेल तो करना है और अच्छी सलाह तो देनी है पर उनकी जिम्मेदारियों को अपने सर पर नहीं ले लेना क्योंकि आप यह समझते हैं कि आपका बच्चा उसके सक्षम नहीं है। अगर आप ऐसा कर रहें है तो बच्चों का नुकसान कर रहे है और कई बार सब करते हुये तिरस्कार के पात्र भी बन जाता है। बुढ़ापे में आपको अपने परिवार का दायरा बड़ा करना होगा आपका जीवन न केवल बच्चों के लिये ही हो पर समाज के लिये भी हों। उसे बचे हुये जीवन के प्रत्येक दिन का अधिक सें अधिक लाभ लेने की सोचनी चाहिये और जिस समाज और देश ने आपको यहां तक पहुंचाया, उस ऋण से भी उऋणी होना आपका कर्तव्य बन जाता है। पर यह सब सेवा निस्वार्थ भाव से हो न कि अपने लिये या परिवार के लिये कुछ लाभ प्राप्त करने के लिये या पद की लोलुपता के लिये। कई बार कुछ बृध इस कारण पद से चिपके रहते हैं और समाज देश का नुकसान करते है। बहुत से सस्थानों में अक्सर यह भी देखने को मिला है कि बृध यह कह कर कुर्सी को नहीं छाड़ता कि नवयुवक इस के योग्य नहीं है। यह सोच भी गलत ह। आप नवयुवक को काम करने का मौका दिजीये और जहां वह गलत है उस से उस बारे में विचार करें। अगर आपकी बात ठीक है तो वह अवष्य मानेगा। बृधा अवस्था में नये संग्रह करने से बचें। इस के स्थान पर, सुखी रहने के लिये, संग्रह की गई धन-सम्पदा, सुविधाओं आदि को समेटना, संभालना और बांटना प्रारम्भ कर दें। आम व्यक्ति फैलाना जानता है, समेटना नहीं। वह भूल जाता है कि इस दुनिया से एक दिन जाना है और उस के लिये तैयारी करना आवष्यक है। सीधी सादी जिन्दगी जीते हुये अपनी ज़रूरतों को न्यूनतम रखे और

समय बचा कर उस समय को स्वाध्याय, सत्संग, साधना, आत्म-चिन्तन, सेवा तथा परोपकार में लगाये। इसी में बुद्धिमता है और इसी में उस का कल्याण है। बृद्ध व्यक्ति को प्रभु से निकटता और विष्वास बढ़ाना चाहिये क्योंकि उस से धैर्य और बल मिलता हैं सृष्टि में कालचक्र निरंतर चल रहा हैं। हमें उसका मन में हरदम क्षयाल रखना चाहिये। अनितम यात्रा प्रभु की और चलने की होनी चाहियें। मनुश्य तन से बूढ़ा हो ताता है पर मन से नहीं। इसलिये उम्र बढ़ने के साथ.सथ मन को समीालना बहुत आवश्यक हो जाता है। मनसिक पांति के लिये अध्यात्मिक विचार से बढ़कर और कोई अन्य दवाई नहीं, जो कि प्रापत होती है सत्संग, सुविचार और प्रभु भक्ति से। इसलिये मनुश्य बुढ़ापे में सत्संग, सुविचार और प्रभु भक्ति के मौके तराषता रहे। बुढ़ापे मेंजीवन का आधार अच्छा स्वास्थ्य और मानसिक पांति है। इस दोनों को हर स्थिती में बनाये रखें। मन को निराष न होने दें। जब भी मन निराष होने लगे तो अपने जीवन की कुछ उपलब्धियों पर सोच को ले जायें। षिघ्र ही आपको ऐसा लगेगा कि ईश्वर ने आपको बहुत कुछ दिया और लाखों करोड़ों से अधिक दिया। यह सोच आपकी निराषा को दूर कर देगी। अच्छी पुस्तकें पढ़ते रहें और मन को तरोताजा और उत्साहित रखें।

वाणी में मधुरता और व्यवहार में विनम्रता रखें। इस से सब के साथ रहते हुये जीवन आसान हो जाता है। यह मान कर चलें कि आपकी हर बात नहीं मानी जायेगी। इसलिये विचारों की सहमती पर बल दें। किसी महान व्यक्ति ने कहा है—कहीं कहो, कहीं सुनो, कहीं सहो और कहीं पांत रहो तभी जीवन चलता है। तो आपकी आदतें हैं, उनका गुलाम न बनें, वरना आप परेषान रह सकते है। सोच को बदलने से जीवन बदल जाता है। नई दुनिया नहीं मिलती है, जो मिली है उसी में रहना और जीना हैं। उसी को सुखमय मनाना आपकी सफलता है।

परिवार जनों को इस बात काध्यान रखना है कि बुजुर्गों को सम्मान सब से अधिक प्रिय होता है। सममान मिलता रहे तो वे और कुद नहीं चाहते। इसके विपरीत असम्मान और उपेक्षा उन्हे तोडत्रने लगती है और दुखी कर देती है। इसलिये परिवारजनों को उनका सम्मान हर हालत में करना चाहिये। पर सम्मान केवल पैर छू कर ही नहीं हो जाता। सम्मान उनकी सेवा व उनका ख्याल रखने से होता है। यही सही श्राध है।

ईश्वर के सन्ध्य से जीवन में पवित्रता आती है। कल्याणकारी कार्य करने की प्रेरणा मिलती है और दुख में भी प्रसन्न रहने की षक्ति मिलती है। जीवन पाप और अन्याय से बचा रहता हैं इसलिये प्रभु को ही सब से अधिक समय में देने मे सुख हैं।

आपकी आत्मा में जो व्यवहार आपको अपने लिये अच्छा नहीं लगता वह भूल कर भी दूसरों के साथ न करे—यही धर्म है धर्म की जो बात सभी अपस के झगड़ों को खत्म कर सकती है वह है—आपकी आत्मा में जो व्यवहार आपको अपने लिये अच्छा नहीं लगता वह भूल कर भी दूसरों के साथ न करे। आज सभी झगड़े हैं ही इस लिये क्योंकि जो व्यवहार हम दूसरों से अपने प्रति चाहतें हैं वह हम दूसरों के साथ नहीं करते। अभी आर्य समाज के सत्संग में एक सुन्दर दृश्टांत देते हुये इसे समझाया। एक गांव में वहां का कोई किसान अपने गांव के बनिये से कुछ सामान लेने गया। सामान में एक किलो चीनी भी थी। ज बवह पैसे देकर बापिस आने लगा तो बनिया बोला आप गाय तो रखते होंगे। किसान ने कहा—रखता हूं। बनिया बोला—मुझे एक किलो गाय का घी चाहिये। किसान बोला, 600 रूप्या किलो है। बनिये बोला, यह लिजिये 600 रूप्या, मैं आपके साथ अपना नौकर भेज रहो हूं, उसे तोल कर घी दे दें। किसान ने नौकर को घी देकर भेज दिया। बनिये ने सोचा, घी को तोल कर देख लेना चाहिये पूरा भी है। जब उसने तोता तो 950 ग्राम निकला, अर्थात 50 ग्राम कम। बनिये को बहुत गुंस्स आया, उसने नौकर को कहा, जाओ उस किसान को मेरे पास लेकर आओ। घी तोला तो सचमुच 50ग्राम कम थां। किसान बोला—लाला जी इस में मेरा कसूर बिलकुल नहीं। मैं आपसे एक किलो चीनी लेकर गया था। वही चीनी का लिफाफा मैने एक तरफ रख कर घी तोल दिया। लाला अब क्या बोलता। यह सच्चाई है कि जो व्यवहार हम दूसरों से अपने प्रति चाहतें हैं वह हम दूसरों के साथ नहीं करते। बनिया अगर चीनी का ठीक तौल किसान को देता तो उसे अवष्य घी पूरा मिलता। इस तरह अगर हमारा व्यवहार घामिर्क हो तो यह लड़ाई झगड़े, उंच नीच का सवाल ही पैदा न हों

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

MRS VEENU GUPTA DISTRIBUTED KINOO, BANANA & PINNI TO CHILDREN OF ASHRAM



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निर्माण के 70 वर्ष

गौस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

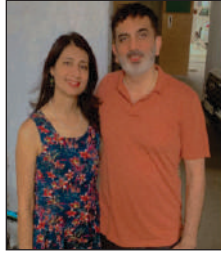
शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



DR SHILPI



MANISH NANDA



MUKESH CHANDER KHULLAR



JYOTI SHARMA



DR ANSHU SHARMA



MRS AND MR. O.P.NANDWANI



O P SETIA



MANOHAR LAL



CHITKARA MADAN LAL



DHARAMBHIR SALWAN

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children



DIPLAST

TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972
FOR BETTER HOMES










IS : 12701



Water Storage Tanks
Diplast Water Storage Tanks

IS : 4985



PVC Pressure Pipes
Diplast PVC Pressure Pipes

IS : 9537



PVC Electrical Conduits
Diplast PVC Electrical Conduits

IS : 13592



PVC SWR Pipes
Diplast PVC SWR Pipes

Learn Waste Segregation & Composting on Zoom Meeting

Contact : 9041655102

DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)
Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870**